Deg-II
HIS-VD P-II

शासन के प्रति जलालुद्दीन का दृष्टिकोण :-

जलालुद्दीन खिलजी (1290-96 ई०) ने एक ही वर्ग को प्रश्रय देने की संकीर्ण नीति नहीं अपनाई। जलालुद्दीन ने बलबन के काल के ऐसे कई तुर्कों और अधिकारियों को महत्वपूर्ण पद और इक्ते प्रदान किये जो उसके पक्ष में आ गये थे। अपने कार्यों के जरिए शासन के एक नये प्रकार की संकल्पना प्रस्तुत की जो मूलतः सभी समुदायों के लोगों की सद्भावना और समर्थन पर आधारित थी और औदार्ययुक्त तथा प्रजा कल्याण निहित थी। इस प्रकार बलबन के विपरीत उसने सम्प्रभुता को आत्म-गौरव तथा अत्याचार से सम्बद्ध नहीं किया। बरनी की सजीव गाथा में, वह "एक चींटी को भी नुकसान न पहुँचाने" की नीति में विश्वास करता था।

यद्यपि जलालुद्दीन खिलजी एक धर्मपरायण मुसलमान था, किन्तु वह हिन्दुओं को बलात धर्मांतरित करने या अपमानित करने की नीति को यथार्थपरक नहीं समझता था, जैसा कि कुछ मुस्लिम धर्मशास्त्री चाहते थे। अपने एक निकट सहयोगी अहमद चप के साथ बहस करते हुए उसने हिन्दुओं द्वारा मूर्तिपूजा करने, अपने धर्म का प्रचार करने एवं ऐसे अनुष्ठानों का संपादन करने का भी पक्ष लिया जो कुफ्र के प्रमाण थे। इस प्रकार उसने हिन्दुओं पर अपने महल की बगल से जुलूस निकालने, ढोल बजाने तथा अपनी प्रतिमाओं को विसर्जित करने के उद्देश्य

P.T.O.

Scanned with CamScanner

से कुछ भमुना नदी के किनारे जाने पर रोक नही लगाई और उन्हे इस्लाम के गढ़ दिल्ली में भी आराम, वैभव और प्रतिष्ठा का जीवन जीने दिया गया। उसका मत था कि वैसे तो आतंक की नीति के जरिए लोगों के हृदय में सरकार के प्रति भय और सम्मान स्थापित किया जा सकता है किन्तु इसके अर्थ इस्लाम का त्याग करना होगा।

जलालुद्दीन खिलजी के भतीजे और दामाद अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316) ने अपने चाचा को धोखे से हत्या करने के बाद राजगद्दी प्राप्त की। जलालुद्दीन के उदार और मानवतावादी दृष्टिकोण को स्वीकार नही किया। फिर भी, जलालुद्दीन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतो का दीर्घकालीन महत्व रहा व उनको किसी न किसी रूप में सभी उत्तराधिकारियों द्वारा अपनाया गया।

इस प्रकार जलालुद्दीन के शासन काल का दीर्घकालीन महत्व है जो अक्सर उपेक्षित ही रहा है।